जनपद भिण्ड (म0प्र0) में जनसंख्या का कालिक वितरणः

एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 पुष्पहास पाण्डेय
पी–एच.डी.–नेट
सहायक प्राध्यापक, (भूगोल)
अनुदानित महाविद्यालय
सम्बद्ध छ0 शा0 म0
विश्वविद्यालय–कानपुर
&
शिवम् वर्मा
नेट–जे.आर.एफ.
शोध छात्र,
(भूगोल)–जीवाजी
विश्वविद्यालय, ग्वालियर

शोधसार

मानव प्रकृति द्वारा सृजित सर्वोत्तम कृति है। जिसने अपने ज्ञान, विवके, कौशल, सामर्थ्य इत्यादि के समुचित उपयोग से अनेको–अनेक सकारात्मक परिवर्तनों को अंगीकृत किया। समयानुसार न केवल मानव के बौद्धिक पक्ष में अभिवृद्धि हुई, अपितु मानव के संख्यात्मक स्वरूप में भी सकारात्मकता परिलक्षित होती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड (म0प्र0) भी मानव के संख्यात्मक परिवत. ʻनशील स्वरूप से विलग नहीं हैं। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का परिवर्तनशील स्वरूप में कालान्तर भिन्न–भिन्न है, जिसकी वृद्धिदर भी अलग–अलग रही। जनसंख्या स्वरूप व उपलब्ध विविध संसाधनों के मध्य सामान्जसय आवश्यक है, अतः क्षेत्र विशेष के जनसंख्या सम्बन्धी वितरण का ज्ञान होना आवश्यक है।

विशिष्ट शब्दः बौद्धिक अंगीकृत, कौशल, सामर्थ्य, ज्ञान

प्रस्तावनाः

मानव के कालिक अभ्युदय से लेकर वर्तमान तक मानवीय जनसंख्या के कालिक स्वरूप में सामान्यतः वृद्धि परिलक्षित होती है। जनसंख्या के कालिक परिवर्तन में असमानता होती है, जिसका मुख्य कारण विविध प्रभावों द्वारा जनसंख्या वृद्धि का प्रभावित होना है। मानव की जनसंख्या वृद्धि के अलग–अलग क्षेत्रों पर भिन्न–भिन्न प्रभाव होते हैं।

अध्ययन क्षेत्रः

अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड का क्षेत्रफल 4459 वर्ग किलोमीटर है। अध्ययन क्षेत्र का विस्तार 25° 55′ उत्तरी अक्षांश से 26° 48′ उत्तरी आक्षांश तक, तथा 78° 12 पूर्वी देशान्तर से से 79 05′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जनपद भिण्ड में औसत वार्षिक वर्षा 759 मि0मी0 तथा औसत वार्षिक तापमान 30° से सेण्टीग्रेड से 36^0 सेण्टीग्रेड के मध्य रहता है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2001 की जनगणनानुसार जनसंख्या व्यक्ति थी, जिसका स्वरूप परिवर्तनशील है।

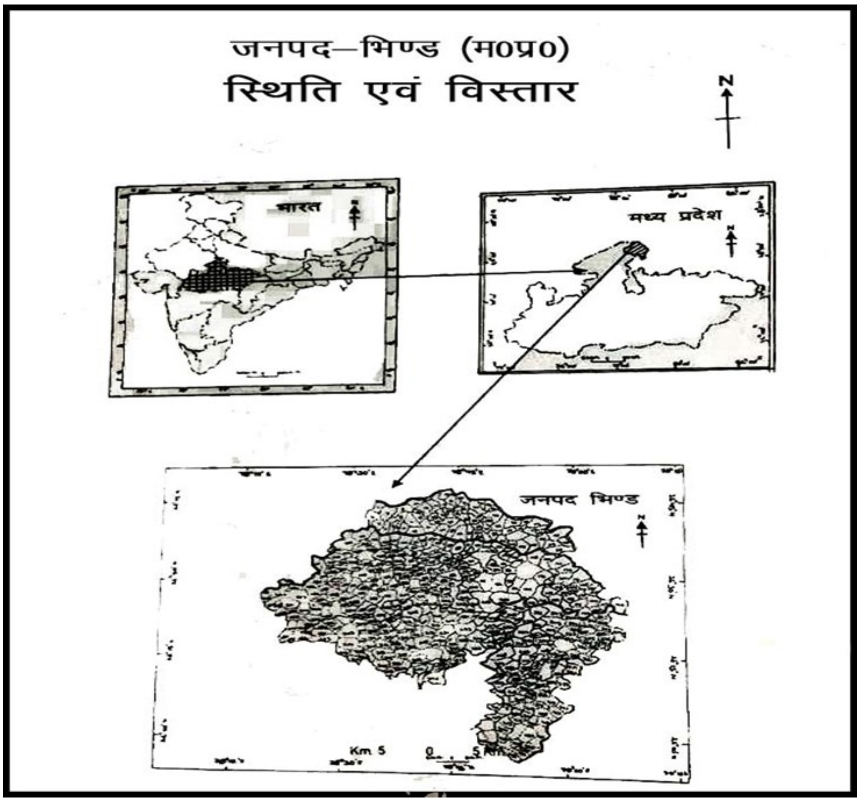

परिकल्पना निर्माणः

- जनसंख्या गत्यात्मक है।
- जनसंख्या वृद्धिदर सदैव भिन्न–भिन्न होती है।
- जनसंख्या का परिवर्तनशील स्वरूप अनेक कोरकों से प्रभावित होता है।
- जनसंख्या वृद्धि अनेकों समस्याओं व चुनौतियों को जन्म देती है।

उद्देश्य

- अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या के गत्यात्मक कालिक स्वरूप को जानना।
- जनसंख्या वृद्धिदर की व्याख्या करना।
- अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं को जानना।
- उपस्थित समस्याओं व जनसंख्या वृद्धि दर को नियन्त्रित करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

विधितन्त्रः

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं को जानने हेतु प्राथमिक श्रोतों की सहायता ली जायेगी। आवश्यकतानुसार मानचित्र, सारणी आदि का भी उपयोग किया जायेगा। प्रस्तुततीकरण हेतु विभिन्न विषय सम्बन्धी विद्वानों द्वारा दिये गये मार्गदर्शन का अनुसरण किया जायेगा।

विश्लेषण एवं व्याख्या

जनसंख्या सम्बन्धी विविध अध्ययनों में संलग्न विद्वानों ने अपने–अपने अनुसार विभिन्न अध्ययनों को प्रस्तुत शीर्षक सम्बन्धी अध्ययनों को नवीनता प्रदान की। बर्कले (1958), गोसल (1960), चाँदना (1979) ने जनसंख्या के परिवर्तनशील स्वरूप का अध्ययन कर, उस हेतु उत्तरदायी कारकों की भी व्याख्या की।

जनपद भिण्ड (म0प्र0) में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति एवं दशकीय अन्तर, सन् 1901 से सन् 2001 तक

वर्ष	जनसंख्या	दशकीय अन्तर	प्रतिशत	म0प्र0 राज्य में दशकीय अन्तर का प्रतिशत	देश में दशकीय अन्तर का प्रतिशत
1901	432296	-	-	-	-
1911	412684	-19612	-4.54	+15.30	+5.73
1921	393849	-18835	-4.56	-1.38	-0.30
1931	430376	+36527	+9.27	+11.39	+11.00
1941	494059	+63683	+14.80	+12.34	+14.23
1951	527978	+33919	+6.87	+8.64	+13.31
1961	641169	+113191	+21.44	+24.17	+21.64
1971	793955	+152786	+23.83	+28.67	+24.66
1981	973816	+179861	+22.65	+25.27	+24.08
1991	1214480	+240664	+24.71	+265.75	+23.16
2001	1428559	+214079	+17.62	+24.34	+21.34

मानवीय आयाम एवं सामाजिक–आर्थिक कारक

किसी क्षेत्र के न केवल कृषि विकास में, अपितु उस क्षेत्र के आर्थिक विकास में भी मानव संसाधन सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक होता है,क्योंकि मानव न केवल उस क्षेत्र के आर्थिक प्रतिरूप,संसाधन उपभो. क्ता एवं कृषि प्रतिरूप को प्रभावित करता है,अपितु मानव स्वयं भी एक गतिक संसाधन है। मानव तथा उसके द्वारा जनित मानवीय आयाम एवं सामाजिक–आर्थिक स्वरूप के कृषि के विकास पर गहन प्रभाव परिलक्षित होता है। वोसेरप के अनुसार, जनसंख्या वृद्धि न केवल कृषि में नवीन तकनीक तथा कृषि भूमि उपयोग में ही सुधार हेतु महत्वपूर्ण कारक है, अपितु बढ़ती हुई जनसंख्या की मौलिकि आवश्यकताओं की संपूर्ति को भी निर्धारित करता है।

किसी क्षेत्र की कृषि उपयोग पद्धति एवं कृषि तकनीक परस्पर सहसम्बन्धित होती है। जनसंख्या में अभिवृद्धि के परिणामस्वरूप कृषि भूमि का गहन उपयोग और तदनरूप कृषि में नवीन प्राविधिकीय

परिवर्तन भी घटित होते है। परिणमतः उपभोगकर्ता व उत्पादक के रूप में, कृषि से सम्बन्धित मानवीय आयाम एवं सामाजिक–आर्थिक कारक कृषि विकास के नियंत्रक होते है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार, अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड (म0प्र0) की कुल जनसंख्या 1428559 व्यक्ति हैं, जो मध्य प्रदेश राज्य की कुल जनसंख्या 60385118 व्यक्ति की (2.36%) है। जनपद का जनसंख्या घनत्व 320 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 तथा जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर (1.76%) है। अध्ययन क्षेत्र में, प्रभाावित चम्बल, क्वारी, सिन्ध, पहूज, बेसली, आसन इत्यादि नदियों ने अपने समीपवर्ती क्षेत्र को बीहड़ एवं खड्ड भूमि में परिवर्तित कर दिया है। खनिज संसाधन से विहीन तथा कृषि भूमि उपलब्धता की सीमितता के कारण, जनपद भिण्ड सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से एक पिछड़ा क्षेत्र है।

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तिः

सन् 1901 में, अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड (म0प्र0) की कुल जनसंख्या 432296 व्यक्ति थी, जो सन् 2001 में बढ़कर 1428559 व्यक्ति हो गयी है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में विगत 90 वर्षो के कालान्तराल में, जनसंख्या में (230.46%) की वृद्धि हुई। सन् 1901 व सन् 1911 के मध्य अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में ह्रास देखने को मिलता है। यह जनसंख्या ह्रास आगामी दशक सन् 1921 में भी सतत् रहा, किन्तु सन् 1921 व सन् 1931 के दशक के मध्य में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में (9. 27%) की वृद्धि हुई। सन् 1931 से लेकर 1951 तक अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि सामान्य थी, किन्तु सन् 1951 के बाद जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर उच्च होने लगी और जनपद भिण्ड (म0प्र0) की कुल जनसंख्या सन् 1991 तक, लगभग तीन दशकों में दो गुनी हो गयी। जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर जो, सन् 1961 में (21.44%) थी, भी बढ़कर (24.71%) हो गयी। यह दशकीय वृद्धि (24.71%) सन् 1901 से सन् 1991 तक सर्वाधिक थी। सन् 1991 व सन् 2001 के मध्य अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर में (7.22%) का ह्रास हुआ। जनसंख्यावृद्धि दर में इस ह्रास का कारण जनपद में साक्षरता में वृद्धि, परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता व अंगीकरण तथा स्थानान्तरण प्रमुख उत्तरदायी कारक रहे। सन् 1901 से सन् 2001 तक की जनसंख्या की दशकीय वृद्धि को तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका में स्पष्ट है, कि अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड (म0प्र0) की सन् 1901 व सन् 1911 की दशकीय वृद्धि में पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में जहाँ सन् 1901 व सन् 1911 में जनसंख्या में ह्रास हुआ है, वहीं मध्यप्रदेश राज्य व देश में जनसंख्या में दशकीय वृद्धि देखने को मिलती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद भिण्ड (म0प्र0) में जनसंख्या ह्रास का प्रमुख कारण जनपद की भौगोलिक स्थिति, दस्यु प्रभाव आदि कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी रहे। इसके बाद अध्ययन क्षेत्र में सन् 1931 से सन् 2001 तक जनसंख्या में सतत वृद्धि देखने को मिलती है। इसी प्रकार की जनसंख्या वृद्धि राज्य

तथा देश में भी देखने को मिलती है। सन् 1961 से सन् 1971 तथा सन् 1981 के दशकों में भी जनपद की जनसंख्या वृद्धि लगभग देश की जनसंख्या वृद्धि दर के समान रही। किन्तु सन् 1991 व सन् 2001 में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में दशकीय वृद्धि में (7.22%) का ह्रास हुआ, जिनका प्रमुख कारण परिवार कल्याण कार्यक्रमों की सफलता तथा जीविकोपार्जन हेतु श्रमिकों का बड़ी संख्या में स्थानान्तरण है। विकासखण्डवार जनसंख्या वृद्धि में भी पर्याप्त अन्तर देखने को मिलता हैं सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर जपवद के विकासखण्ड गोहद में तथा सबसे कम जनसंख्या वृद्धि दर अध्ययन क्षेत्र के विकासखण्ड अटेर में देखने को मिलती है।

वर्तमान में जनपद भिण्ड (म0प्र0) की जनसंख्या तीन दशकों में दोगुनी से भी अधिक हो गयी, जबकि सनृ 1901 से सन् 1951 तक लगभग 50 वर्षो में यह जनसंख्या की वृद्धि एक लाख से भी कम (95682 व्यक्ति) थी।

निष्कर्ष एवं समाधान

उपर्युक्त विश्लेषणोपरान्त यह कहा जा सकता है, कि जनपद भिणड (म0प्र0) में वृद्धिमान जनसंख्या स्वरूप है। जनसंख्या के कालिक वृद्धिमान स्वरूप ने अनेकों समस्याओं को जन्म दिया जैसै– बढ़ता जन घनत्व संसाधनों पर दबाव में वृद्धि, विकृत होता भूमि–उपयोग प्रतिरूप, प्रदूषण में वृद्धि इत्यादि।

सम्बन्धित विविध समस्याओं को समान क्षेत्रीय विकास, सुविधाओं एवं सेवाओं में अभिवृद्धि, नियोजित प्रवास, परिवार नियोजन सम्बन्धी उपायों को जन–जन तक पहुँचाकर शिक्षा की सुविधाओं में वृद्धि आदि को अपनाकर वर्तमान वृद्धि दर नियोजित हो सकती है। और साथ ही साथ समेकित विकास में भी सहायता मिलेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- District Hand Book of Bhind (MP)
- Chandra, R.C. (1979): India's population policy.
- Carter, H. (1979): The study of urban Geography-London
- Smith, T.(1937): The population of lousiana.
- Zipf, G.K.(1949): Human Behaviour and the principle of least effort.